# सारांशिका

साहित्य-सृष्टि का मार्ग समाज से होकर ही गुजरता है । यही साहित्य का मूलाधार है । साहित्य के माध्यम से विविध समय के इतिहास को देखा जा सकता है । प्रस्तुत शोध-प्रबंध का विषय है "मैत्रेयी पुष्पा और रीता चौधुरी के उपन्यासों में अभिव्यक्त नारी संवेदना: एक तुलनात्मक अध्ययन ।" शोध का क्षेत्र उपन्यास है; जहाँ नारी संवेदना पर प्रकाश डाला गया है । हिन्दी तथा असमीया साहित्य जगत के प्रसिद्ध कथाकार क्रमशः मैत्रेयी पुष्पा और रीता चौधुरी के उपन्यासों के आधार पर यह अध्ययन पूरा किया गया है । वर्तमान समय में नारी-संवेदना के अध्ययन की आवश्यकता से सभी परिचित है । यह शोध कार्य इसलिए भी प्रासंगिक है क्योंकि दो भिन्न प्रांत के कथाकारों का यहाँ मिलन हुआ है । दोनों ही सु-प्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित कथाकार हैं । शोध की सीमा दोनों कथाकारों के कुल आठ उपन्यासों को लेकर पूरा हुआ हैं । तुलनात्मक साहित्य दो भाषाओं के बीच संयोग का माध्यम है । इसके अंतर्गत संसार के समस्त साहित्य को एकक रूप में देखने का प्रयत्न किया जाता है । दो भिन्न साहित्य के भिन्न विषयों के साथ संपर्क स्थापित करने में तथा साहित्य के अध्ययन के क्षेत्र को अधिक विस्तृत रूप प्रदान करने में तुलनात्मक साहित्य ही सबसे सहायक सिद्ध होता है । प्रस्तुत शोध प्रबंध में हिन्दी और असमीया साहित्य के उपरोक्त दोनों कथाकारों के प्रमुख उपन्यासों में निहित 'नारी संवेदना' को वर्तमान समय के प्रसंग में देखा गया हैं और तुलनात्मक दृष्टि से इसपर विचार एवं विश्लेषण करने का प्रयत्न किया गया है ।

शोध कार्य का उद्देश्य कुछ प्रकार हैं-

i. मैत्रेयी पुष्पा और रीता चौधुरी ने भिन्न प्रांत और परिवेश में बसे नारियों की मार्मिक व्यथा का चित्रण प्रस्तुत किया गया हैं । यद्यपि दोनों भारत के दो भिन्न प्रदेशों को प्रतिनिधित्व करती हैं, फिर भी नारी हृदय की व्यथा का चित्रण दोनों में एक जैसा हैं ।

शोध का उद्देश्य इस व्यथा तक पहुँचना है और दो भिन्न प्रांत की भिन्न परिस्थितियों का विश्लेषण कर उन ह्रदयों की व्यथा को जोड़ना है ।

ii. शोध का दूसरा उद्देश्य दो भिन्न प्रांत के लोगों के मन में भावनात्मक तथा मानवीय एकता को जागृत करना हैं । जिससे लोग दूर होकर भी एक दूसरे के प्रति एकात्मकता का सहज अनुभव करने में सक्षम होंगे और एक दूसरे के प्रति सह्रदय बन पायेंगे ।

iii. दो भिन्न भाषा-भाषी साहित्यिकों की रचनाओं के तुलनात्मक अध्ययन द्वारा देश की एकता को प्रोत्साहन दिलाना शोध कार्य का तीसरा उद्देश्य रहा है, जिससे दो भिन्न भाषाओं को समृद्धि भी प्राप्त होगी ।

नारी संवेदना वर्तमान प्रासंगिक है; इसकी चर्चा प्रायः एक दशक के पहले से होती आ रही हैं । इस क्षेत्र में अब तक अनेक समीक्षात्मक ग्रंथ लिखे जा चुके हैं । इनमें कुछ प्रमुख इस प्रकार हैं- *समकालीन हिन्दी महिला कथाकारों का नारीविमर्श*: डॉ॰ सुखविंदर कौर बाठ, *स्त्रीवादी साहित्य* : जगदीश चतुर्वेदी, *तबदील निगाहें*: मैत्रेयी पुष्पा, *स्त्री विमर्श (कलम और कुदाल के बहाने)*: रमणिका गुप्ता आदि । इधर असमीया साहित्य में *नारीवाद आरू असमीया उपन्यास*: गोविंद प्रसाद शर्मा, *असमीया उपन्यासर गति-प्रकृति*: शैलेन भराली आदि प्रमुख हैं । इन सभी ग्रन्थों में भारत तथा पाश्चात्य पृष्टभूमि की चर्चा के साथ साथ साहित्य में नारी संवेदना के विकास के बारें में चर्चा की गई है । मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों और अन्य साहित्यिक विधाओं पर अनेक काम हुए हैं । उनके साहित्य पर शोध-प्रबंध तथा लघु शोध-प्रबंध भी प्रस्तुत किया जा चुका है । उनमें से कुछ प्रमुख इस प्रकार के हैं-*मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में नारी जीवन* : शोभा यशवंत, *मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में नारी सशक्तिकरण*: कंकना गोयल, *मृदुला गर्ग और मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री विमर्श*: बिभा कुमारी, *मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में नारी*: संतोष पवार, इत्यादि । इन सभी ग्रन्थों में मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य का सर्वेक्षण किया गया हैं और उसमें निहित स्त्री-विमर्श पर विचार किया गया है, परंतु असमीया अथवा दूसरी प्रादेशिक भाषा के साहित्य के साथ इसका तुलनात्मक अध्ययन अब तक नहीं हुआ है । इस दृष्टि से यह शोध

कार्य महत्वपूर्ण है । दूसरी ओर रीता चौधुरी का साहित्य भी चर्चित व प्रासंगिक है जो अब अन्य भाषाओं में अनुदित हो रही हैं । 19 सदी में उभरने वाले इस कथाकार को असमीया पाठकों ने सराहा हैं । इनके उपन्यासों की कथन-शैली निराली है, असमीया आलोचनात्मक ग्रन्थों में उनके उपन्यासों की समीक्षा की गई है । इसके अलावा लघु शोध-प्रबंध में भी उन्हें अब शामिल किया जा रहा है । किन्तु अब तक उनके साहित्य पर कोई स्वतंत्र शोध कार्य नहीं किया गया है ।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध की सबसे बड़ी मौलिकता यह है कि यह रीता चौधुरी के साहित्य का प्रथम मौलिक विवेचन है । दूसरी मौलिकता यह है कि पहली बार मैत्रेयी पुष्पा और रीता चौधुरी के साहित्य का तुलनात्मक विवेचन किया गया है । दो भिन्न भाषा के साहित्य की आलोचना यहाँ की गई है; जहाँ दो भिन्न प्रांत के परिवेश व परिस्थिति के आधार पर नारी की संवेदना को विश्लेषित किया गया है और इस पर अब तक कोई स्वतंत्र शोध कार्य सम्पन्न नहीं हुआ हैं ।

इस शोध प्रबंध को तुलनात्मक, विश्लेषणात्मक और विवरणात्मक पद्धति से पूरा किया गया है । दोनों कथाकारों के उपन्यासों का विस्तृत विश्लेषण व विवेचन किया गया है एवं उनके उपन्यासों के नारी पात्रों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है । नारी संवेदना की पृष्टभूमि तथा कथाकारों के साहित्यिक परिचय प्रदान करते समय विवरणात्मक पद्धति का सहारा लिया गया है । नारी पात्रों के विश्लेषण में आवश्यकतानुसार मनोवैज्ञानिक और आलोचनात्मक पद्धति का भी सहारा लिया गया है । इन सभी दृष्टिओं को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध प्रबंध को कूल पाँच अध्यायों में बाँटा गया हैं ।

प्रथम अध्याय में नारी संवेदना का स्वरूप और पृष्ठभमि पर विचार किया गया है । इस अध्याय के अंतर्गत संवेदना शब्द के तात्पर्य को स्पष्ट किया गया है और साथ ही नारी संवेदना के आशय पर भी प्रकाश डाला गया है । संवेदना का कोशगत अर्थ कुछ इस प्रकार निकलता है- 'अनुभूति', 'सहानुभूति' (जैसे हार्दिक संवेदना), 'समवेदना प्रकट करने का भाव', 'दुःख की

अनुभूति' आदि । अंग्रेजी शब्दकोश में 'Sensitivity' को संवेदना का पर्यायवाची माना गया है । 'Sensitivity' यानि 'महसूस करना', 'किसी बात की अनुभूति होना' इत्यादि । अर्थात 'संवेदना' का आशय यह माना जा सकता है कि किसी वस्तु, व्यक्ति या घटना के प्रति अनुभूतिशील होना, उसको महसूस करना । उस दर्द या दुःख को समझना, इत्यादि । 'नारी संवेदना' शब्द संवेदना के मूल अर्थ को वहन करते हुए भी थोड़ा संक्षिप्त है, यहाँ संवेदना शब्द का अर्थ अन्य सभी विषयों की संवेदना से हटकर केवल नारी के लिए ही सीमित होकर रह जाती है । नारी के अन्तर्मन की अनुभूतिओं के गहनतम रूप को ही नारी संवेदना का मूल आशय माना जा सकता है । इसके बाद यूरोप के नारी मुक्ति आंदोलन से लेकर भारतीय परिसर तक की चर्चा की गई हैं । तत्पश्चात साहित्य में निहित नारी संवेदना पर विवेचन किया गया है । किस प्रकार नारी उपन्यास के केंद्र में आई और हिन्दी तथा असमीया साहित्य में नारी संवेदना का किस प्रकार प्रवेश व विकास हुआ, उसका लेखा-जोखा भी इस अध्याय में प्रस्तुत किया गया है ।

नारी संवेदना के तात्पर्य एवं पृष्ठभूमि से परिचित होने के बाद दूसरे अध्याय में मैत्रेयी पुष्पा और रीता चौधुरी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की चर्चा की गई है । प्रस्तुत अध्याय में दोनों कथाकारों के जीवन परिचय से लेकर उनकी साहित्यिक विशेषता व शैली आदि पर प्रकाश डाला गया है । उसके बाद दोनों साहित्यकारों के रचना-संसार एवं सम्मान-पुरस्कार आदि का विवरण प्रस्तुत किया गया है । दोनों ही कथाकार अपने अपने क्षेत्र में प्रतिष्ठित हैं । अपनी अनोखी लेखन शैली व विचारों के लिए वें पाठकों के बीच समादृत हैं । अध्याय के अंत में मैत्रेयी पुष्पा और रीता चौधुरी का एक तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है । दोनों कथाकार भारत के दो भिन्न जगह से अपना परिचय रखते हैं । दोनों की जीवन शैली में भिन्नता परिलक्षित होती है । परंतु अपने आप को प्रतिष्ठित करने हेतु दोनों कथाकारों ने यथासंभव संघर्ष किया हैं, हाँ परिस्थितियाँ निःसंदेह अलग रही थी। अपने शैक्षिक जीवन में भी दोनों कथाकारों को अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ा था । मैत्रेयी पुष्पा का बचपन रीता चौधुरी की अपेक्षा अधिक

कठिन व कष्ठमय रहा । रीता चौधुरी को आर्थिक दीनता का सामना नहीं करना पड़ा था परंतु मैत्रेयी पुष्पा को इस कठिन वास्तव का भी सामना करना पड़ा था ।

दोनों कथाकारों के परिचय प्रस्तुत करने के उपरांत तृतीय अध्याय में शोध की सीमा को दृष्टि में रखते हुए मैत्रेयी पुष्पा और रीता चौधुरी के उपन्यासों के प्रतिपाद्य का विश्लेषण किया गया हैं । साथ ही उन उपन्यासों की प्रासंगिकता पर भी विचार किया गया हैं । मैत्रेयी पुष्पा के *चाक, इदन्नम्मम अल्मा कबूतरी* और *विजन* और रीता चौधुरी द्वारा रचित *देउलांखुई, एइ समय सेई समय, मायाबृत* तथा *पपीया तरार साधू* इन आठ उपन्यासों को यहाँ मुख्य रूप में लिया गया है । दोनों ने मुख्यतः सामाजिक उपन्यास ही लिखे हैं, जिनके अध्ययन से यह प्रमाणित होता है उनके उपन्यासों में सामाजिक खोखलेपन व अन्यायों का प्रमाण मिलता हैं और जो विशेष रूप से नारी से जुड़ी हुई परिलक्षित होती है । नारी पर हो रहे उन तमाम अत्याचार एवं शोषण के इतिहास को यहाँ दर्ज किया गया है । इनकी नायिकाएँ आघात के बाद बैठकर रोती नहीं हैं, बल्कि वे प्रतिवाद करना जानती हैं । अपने हिस्से की न्याय-प्राप्ति के लिए यें लगातार संघर्ष करती हैं और साथ ही दूसरों को भी लड़ने के लिए प्रोत्साहित करती हैं । दोनों कथाकारों की नायिकाओं ने अन्याय के आगे झुकने से इंकार कर दिया है । अपनी राह में आई तमाम बाधाओं को पार कर वें अपनी मंजिल की ओर अग्रसर होती परिलक्षित होती हैं । मैत्रेयी पुष्पा और रीता चौधुरी के उपन्यासों के विश्लेषण से उनके उपन्यासों की प्रासंगिकता का आभास हो जाता है । इन उपन्यासों में वह प्रेरणा-शक्ति है जो कुंठित व शोषित नारियों को लड़ने का हौसला प्रदान कर सकती है । तृतीय अध्याय के अंत में भी दोनों कथाकारों के उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया हैं । जहाँ उनके उपन्यासों की परिस्थितियों, समस्याओं आदि पर विचार किया गया हैं । मैत्रेयी पुष्पा को देहात से अत्यंत लगाव है, जो उपन्यासों के माध्यम से सुंदर रूप में उभरकर आया है । दूसरी तरफ रीता चौधुरी जीवन की विचित्रताओं से प्रभावित है । इसलिए उनके उपन्यासों की पटभूमि में भिन्नता दिखाई देती है । परंतु इतनी विविधताएँ होने के बावजूद भी दोनों कथाकारों के उपन्यासों में

निहित नारी संवेदना का आशय एक ही रहा है। दोनों कथाकारों ने अपने अपने उपन्यासों में नारी हृदय की व्यथा का चित्रण प्रस्तुत किया हैं। जिसकी विस्तृत चर्चा आने वाले दो अध्यायों में की गई है।

उपन्यासों का विश्लेषण करने के उपरांत चतुर्थ अध्याय में उपन्यासों में निहित नारी संवेदना पर मूल रूप में प्रकाश डाला गया है। सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक दृष्टि से यहाँ नारी संवेदना पर प्रकाश डाला गया है। सृष्टि का विकास स्त्री के गर्भ से होता है, परंतु हमारा समाज स्त्री को अपना हिस्सा मानने से आज भी इतराता है। जन्म से लेकर उसके शिक्षा व विवाह तक कही भी, कभी भी स्त्री को स्वतंत्रता नहीं मिली। दूसरों के लिए जीती आई स्त्री की अपनी जिंदेगी कही खो गई है। प्रस्तुत उपन्यासों में उस खोई हुई अस्मिता को खोजने का प्रयास किया गया है। *इदन्नमम* की 'मंदा' अपने जीवन का उद्देश्य खोजने निकल पड़ी है, तो *देउलांखुई* की रानी 'चंद्रप्रभा' ने भी अपने आप को पहचानने के लिए रानीपन का त्याग किया है। यह वही समाज है जो लड़की के जन्म पर मातम मनाता है और जिसके लिए इन पात्रों ने व्यक्तिगत स्वार्थ का त्याग कर अपना जीवन उत्सर्गित किया है। अध्याय के अंत में एक तुलनात्मक अवलोकन भी प्रस्तुत किया गया है। दोनों कथाकारों की नायिकाओं की संघर्ष की पृष्ठभूमि भले ही अलग हो , परंतु उनमें एक सी पीड़ा है। लड़ने की वजह अलग है लेकिन हिम्मत और सच्चाई बराबर है। हाँ, पृथक भौगलिक व सामाजिक परिस्थिति के कारण कही कही भिन्नता परिलक्षित होती है। जैसे उत्तर प्रदेश के कुछ जिलों में लड़की को पैदा होते ही गला घोंट कर मार दिया जाता है, उन्हें अपने से दुगनी-तिगुनी उम्र के लड़के के साथ विवाह करने पर मजबूर कर दिया जाता है। उनके समाज में प्रेम विवाह का तात्पर्य मृत्यु के समान माना जाता है। दूसरी तरफ पुर्वांचल में ऐसी स्थिति उन जिलों की अपेक्षा बहुत कम मात्रा में देखने को मिलती है। इसीलिए मैत्रेयी पुष्पा की नायिकायों के मन में समाज के प्रति एक तीव्र आक्रोश की भावना दिखाई पड़ती है। रीता चौधुरी के उपन्यासों में भी नारी को समाज ने हेय दृष्टि से देखा है, उसकी अवहेलना की है, किन्तु उनका आक्रोश हिंसात्मक नहीं है जबकि मैत्रेयी पुष्पा के

उपन्यास में हिंसात्मक प्रतिशोध परिलक्षित होता है । इस संदर्भ में 'सुगना' द्वारा बलात्कारी अभिलाख की हत्या एक उल्लेखनीय उदाहरण है । यही भिन्नता राजनैतिक और आर्थिक क्षेत्र में भी परिलक्षित होती है ।

उपन्यासों में अभिव्यक्त नारी संवेदना के विवेचन के उपरांत पंचम अध्याय में उपन्यासों के नारी पात्रों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है । यह अध्याय सबसे प्रमुख रहा है, यहाँ मैत्रेयी पुष्पा और रीता चौधुरी-दोनों के अत्यंत साहसी और संवेदनशील पात्रों का विश्लेषण किया गया हैं । उनकी नायिकाएँ इसी रक्षणशील समाज की प्रतिनिधि हैं जो आनेवाली पीढ़ी के लिए एक बेहतर समाज के निर्माण की ओर अग्रसर है । एक ऐसा समाज, जहाँ स्त्री सही मायनों में समाज का आधा हिस्सा होगा, उसका भी समान अधिकार होगा । 'अल्मा', 'मंदा', 'डॉ आभा' तथा 'चंद्रप्रभा', 'अपर्णा', 'अदिति' आदि सशक्त नारी पात्रों ने अपने संघर्ष की परिणति के भय से मुक्त होकर हर अन्याय का सामना किया । प्रस्तुत अध्याय के अंत में नारी संवेदना की दृष्टि से नारी पात्रों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है । उदाहरण स्वरूप *विजन* उपन्यास की नायिका 'डॉ नेहा' अपने जीवन में सफल नहीं हो पाती है, क्योंकि उसने अपने कर्तव्य की अवहेलना की थी । किन्तु 'डॉ आभा' ने अपने कर्तव्य की पुकार को स्वीकार किया और आगे बढ़कर मानव-सेवा में अपने आप को उत्सर्गित किया । ठीक वैसे ही *पपीया तरार साधु* उपन्यास में 'जेउति' पत्रकारिता-जगत की सहज साफल्य की ओर आकर्षित होकर अपने आदर्श को भूल जाती है । फलस्वरूप प्रारम्भ में उसे सफलता तो मिलती है लेकिन उसका नैतिक पतन हो जाता है । वही 'अपर्णा' अपने आप को बरकरार रखने में सफल हुई, क्योंकि उसे सफलता अथवा पुरस्कार प्राप्ति का लोभ नहीं था । वह न तो यश की लोभी थी और न ही धन की । उल्लेखनीय यह है कि दो भिन्न भाषा के कथाकारों ने यहाँ अपने उपन्यासों में चयन की समस्या को लिया हैं । 'डॉ नेहा' और 'जेउति' ने अपने लिए गलत रास्ता चुना था जबकि 'डॉ आभा' और 'अपर्णा' ने सही राह का चुनाव कर जीवन को सुंदर बनाया था ।

प्रस्तुत विवेचनों के उपरांत यह निष्कर्ष सामने आता है कि मैत्रेयी पुष्पा और रीता चौधुरी के उपन्यासों में नारी संवेदना अत्यंत मुखर हो उठी है । दोनों ही कथाकारों ने नारी मन के दुःख को समझा है, साथ ही उनपर हो रहे अन्याय और अत्याचारों के खिलाफ़ आवाज उठाते हुए उन्हें न्याय दिलाने का यथासंभव प्रयास भी किया हैं । मैत्रेयी पुष्पा ने झाँसी और बुंदेलखंड के आस-पास रहनेवाली नारियों की मार्मिक छवि प्रस्तुत की हैं । दूसरी तरफ रीता चौधुरी ने न केवल पूर्वाञ्चल बल्कि भारत के विविध प्रांतों की महिलाओं के दुःखों को भी स्पर्श किया हैं । उनकी रचना *मायाबृत* इन वेदनाओं का प्रमाण है । *मायाबृत* उपन्यास में भारत के भिन्न प्रांत की नारियों की व्यथा को समझने का प्रयास किया गया है । दोनों कथाकारों के उपन्यासों में समस्याओं की विविधता चाहे जो भी रहें हो, किन्तु उनमें आशय सदा एक ही रहा है-'नारी-मन की व्यथा को समझना' । नारी की खोई हुई अस्मिता व सम्मान लौटाकर उन्हें जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करना ही दोनों कथाकारों का प्रमुख उद्देश्य रहा है ।

नंदिता दत्त ।